भीमराव अंबेडकर

दलितों के नेता और सामाजिक समानता के लिए जीवन पर्यंत संघर्षरत डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 18 से 91 को मध्य प्रदेश के नगर महू के मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। वड़ोदरा के महाराजा ने उन्हें छात्रवृत्ति देकर उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा था। वर्ष 1926 में अंबेडकर मुंबई विधान परिषद के सदस्य मनोनीत किए गए। अंबेडकर ने अंग्रेजों द्वारा आयोजित तीनो गोलमेज सम्मेलन में अनुसूचित जाति के प्रतिनिधित्व के रूप में भाग लिया। स्वतंत्र भारत के रूप में अंबेडकर प्रथम विधि मंत्री नियुक्त किए गए विधि मंत्री के रूप में अंबेडकर संविधान निर्माण के प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनाए गए। 5 फरवरी 1951 को संसद में अंबेडकर ने हिंदू कोड बिल पेश किया जिसके असफल हो जाने पर 27 दिसंबर 1951 को नेहरू मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। अमेरिका में वर्ष 1920 में लोकनायक सप्ताहिक पत्रिका एवं वर्ष 1927 में बहिष्कृत भारत पाक्षिक पत्र का प्रकाशन किया। अंबेडकर एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के समर्थक थे।

सामाजिक विचार

डॉक्टर अंबेडकर ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया और ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर आक्रमण किया। वर्ण व्यवस्था के नियम को पूर्णतया और अवैज्ञानिक और अव्यवहारिक ,अन्यायपूर्ण व गरिमाहीन माना।। अंबेडकर ने वर्ण व्यवस्था की तुलना प्लेटो की सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना से की। अंबेडकर के अनुसार वर्ण व्यवस्था में भी दोष विद्यमान है। जो सामाजिक संरचना की प्लेटों की परिकल्पना में विद्यमान थे। उन्होंने जातिवाद की व्यवस्था का घोर विरोध करते हुए कहा कि हिंदू समाज की अनेक विकृतियों और अन्यायों के लिए जाति व्यवस्था उत्तरदाई है। जाति व्यवस्था में सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कोई स्थान नहीं है अस्पृश्यता की जड़े वर्ण व्यवस्था में है अंबेडकर ने समाज के उत्थान के लिए अस्पष्टता का निवारण अति आवश्यक माना चार वर्ण व्यवस्था में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शुद्र को निम्न स्थान दिए जाने पर इस व्यवस्था का उन्होंने विरोध किया।.
शुद्र की उत्पत्ति: अंबेडकर ने अपनी रचना शूद्र कौन है मैं सूत्रों की उत्पत्ति के बारे में अपने विचार दिए उन्होंने शूद्र को कोई अलग वर्ण नहीं बल्कि क्षत्रिय वर्ण का ही भाग माना है शुद्र छत्रिय थे। जिनका ब्राह्मणों ने उपनयन संस्कार बंद कर दिया था।

दलित वर्गों के उत्थान का उपाय

- हिंदू समाज के परंपरागत विधान में क्रांतिकारी परिवर्तन करके हिंदू समाज को क्षमता और भाईचारा के आदेशों के आधार पर संगठित किया जाना चाहिए
- दलित वर्ग के उत्थान के उपाय के रूप में अंबेडकर ने जाति प्रथा के स्वरूप में परिवर्तन का सुझाव दिया
- दलित वर्गों के उत्थान के लिए अंबेडकर ने दलित वर्गों को संगठित जागरूक एवं शिक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया
- दलित वर्गों की दशा में सुधार के लिए अंबेडकर ने उनकी शिक्षा पर महत्वपूर्ण रूप में बल दिया
- दलितों के शोषण को रोकने के लिए उन्होंने संगठित होने का आह्वान किया
- गांव को उदासीनता का अड्डा कहा तथा दलित वर्ग के सदस्यों को गांव छोड़ने का सुझाव दिया और भाभी भारत में शहरों को अध्यक्ष अत्यधिक महत्व दिया
- दलित वर्गों की दशा में सुधार के लिए डॉक्टर अंबेडकर ने दलित विद्यार्थियों को शिक्षा तथा सेवा में आरक्षण प्रदान करने का समर्थन किया
- दलित वर्गों की दशा में सुधार के लिए दलितों को धर्म परिवर्तन करके बौद्ध धर्म स्वीकार करने का भी सुझाव दिया

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

- वर्ष 1956 में डॉक्टर अंबेडकर ने स्वयं बौद्ध धर्म को अपनाया
- डॉक्टर अंबेडकर ने भारत के औद्योगिक करण को दलितों के उद्धार के लिए एक प्रभावशाली उपाय माना

अंबेडकर ने इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी अगस्त 1936 तथा शेड्यूल कास्ट फेडरेशन 1942 जैसे संगठनों की स्थापना की

- **अंबेडकर के राजनीतिक विचार**
- **अंबेडकर ने राज्य का उदारवादी स्वरुप** स्वीकार किया तथा व कल्याणकारी राज्य के पक्षधर थे
- **अंबेडकर ने संसदीय शासन पद्धति का समर्थन किया।**
- अंबेडकर के अनुसार धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकता है परंतु राजनीति में भक्ति या वीर पूजा अपकर्ष और संभावित तानाशाही के लिए मार्ग सुनिश्चित करती है
- अंबेडकर ने ऐसी शासन प्रणाली का समर्थन किया जो शक्तियों के विभाजन पर आधारित हो तथा जिसमें कार्यपालिका व्यवस्थापिका और न्यायपालिका की शक्तियां एक जगह केंद्रित ना हो

अंबेडकर के लोकतंत्र संबंधी विचार

- अंबेडकर ने संवैधानिक लोकतंत्र का समर्थन किया तथा इसकी सफलता के लिए संवैधानिक नैतिकता को आवश्यक माना
- उनके अनुसार राजनीतिक तंत्र लोकतंत्र की सफलता के लिए सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र एक पूर्व शर्त है
- अंबेडकर के अनुसार स्वतंत्र शासन तथा लोकतंत्र वास्तविक होते हैं जब शासक वर्ग की सत्ता को सीमित किया जा सके

अतः केवल संविधान एवं व्यस्क मताधिकार से ही लोकतंत्र स्थापित नहीं होगा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उन्होंने लोकतंत्र की निम्नलिखित समस्याओं का भी वर्णन किया

1. राजनीतिक लोकतंत्र से पहले सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना आवश्यक है
2. लोकतंत्र किस के लिए या ज्यादा महत्वपूर्ण होता है समाज में शासन एवं शासित के मध्य सत्ता का संघर्ष होता है
3. सत्ताधारी अपनी शक्ति एवं प्रतिष्ठा के लिए वंचित वर्गों में प्रभुत्व बनाने में सफल हो जाते हैं

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner